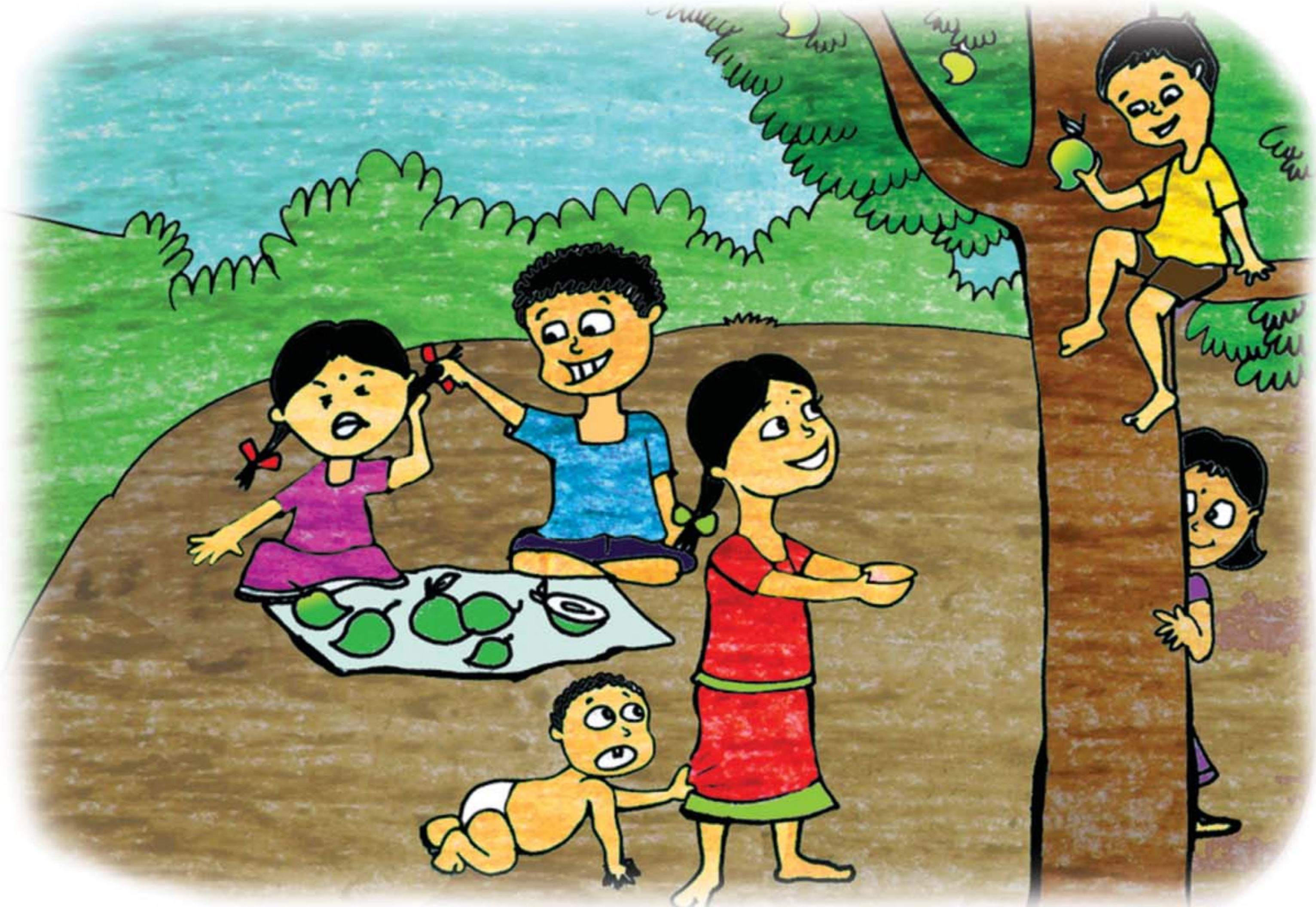

अ
गेंद निराली
मीठू की
राजेश जोशी की कवितायें

गेंद निराली मीठू की



गेंद निराली मीठू की

राजेश जोशी

आकल्पन और चित्रांकन

मीठू

मोनिका नानावरे

प्रकाशन वर्ष : मार्च 2011

सहयोग राशि : 30 रुपये

BHARAT GYAN VIGYAN SAMITI

Basement of Y.W.A. Hostel, G Block, Saket, New Delhi - 110 017,

Phone : 011-2656 9943, Phone-Fax : 011-2656 9773

e-mail: bgvsdelhi@gmail.com, website : www.bgvs.org

मीठू, श्वेता, पम्पम, मीतू, नेहा, मीलू,
राजा, चीकू, रोबिन, रिंकी, टीना, पिन्टू,
दीपू, वर्षू, सोनू और अंकू के लिए

मीठू रानी

मीठू रानी
बड़ी सयानी
पीती दूध
बताती पानी

चुप चुप चुप चुप
गुप चुप गुप चुप
करती रहती
वो शैतानी!



आए बादल

आए बादल आए बादल
पानी जेबों में भर लाए।

इतने सारे ताल तलैया
कहां से तुम भर लाए
जेबों में भी कहीं ठहरता
पानी बुद्धू

बादल के पापा चिल्लाए
जेब उलट दी
उसने झट पट
पानी बरसा
टप टप टप टप।





गेंद निराली मीठू की

लाल लाल है
सूरज जैसी
धरती जैसी
गोल मटोल
गेंद निराली मीठू की
पता नहीं जिसका भूगोल!

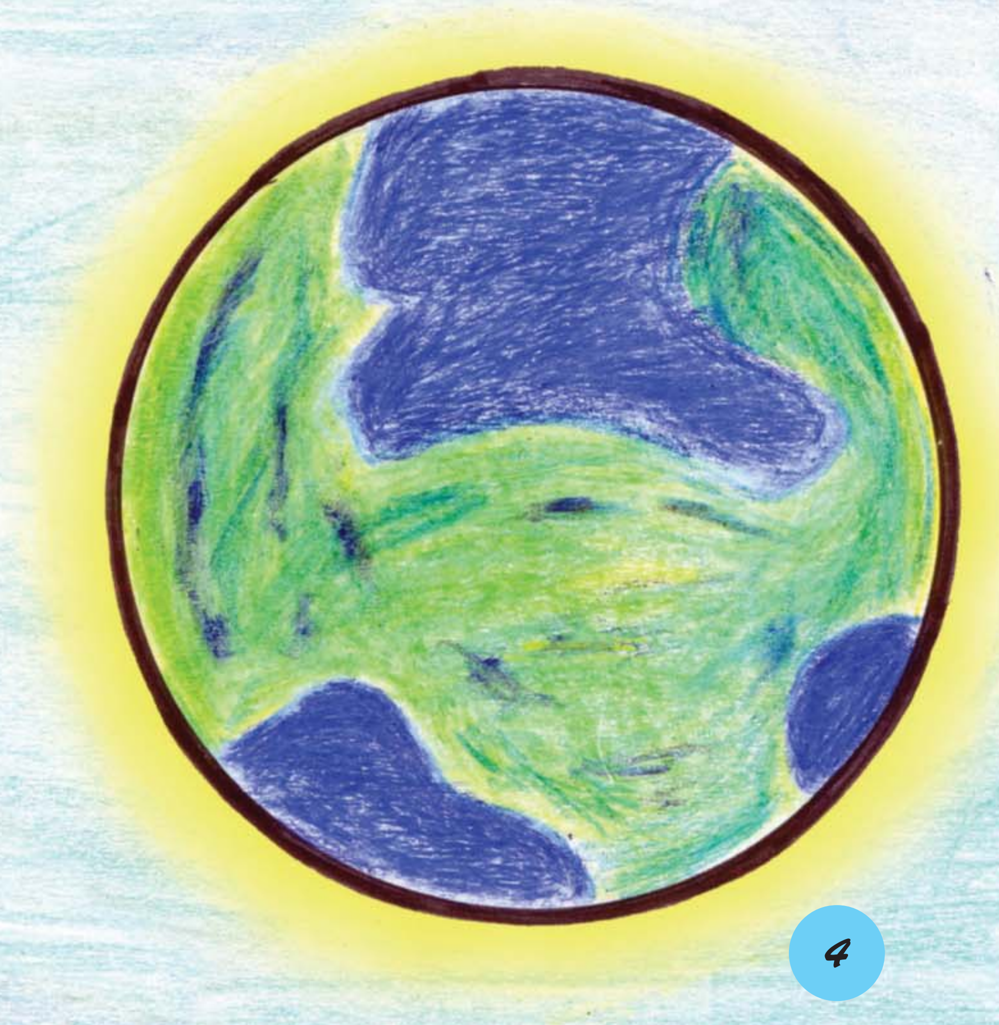
छोटी सी यह पृथ्वी कैसी
एक आग के गोले जैसी

पेड़ पहाड़ न नदियाँ प्यारी
बसी हुई है फिर भी इसमें
सपनों की एक
दुनिया न्यारी



शेर न चीता
भालू न बंदर
हवा भरी है
इसके अंदर

अंतरिक्ष में इसे उछालो
एक नया तुम ग्रह बनालो
भर कर जिसे खिलौनों से
दुनिया एक नई बसालो।



लौट के बुद्धू घर को आये



बड़ी ठसक से निकले घर से
उड़ जायेंगे जैसे फुर्र से
धांग आयेंगे सारी धरती
लांघ आयेंगे सात समन्दर

आसमान में छेद बनाते
उड़ जायेंगे अंदर अंदर
तभी धमाका हुआ जोर से
गिरे टूट कर सपन डोर से
हालत क्या थी मन की प्यारे
किस किस को बतलायें
लौट के बुद्धू घर को आये।

अभी मोड़ तक ही पहुंचे थे
गली छोर तक ही पहुंचे थे
बीच राह में अड़ा था कुत्ता
काला और बड़ा था कुत्ता

बहा पसीना नीचे नीचे
सांस रह गये खींचे खींचे
धरी रह गयी सारी शेखी
कुत्ते ने जब कान हिलाये
लौट के बुद्धू घर को आये।



कहीं नहीं है खेल तमाशे
कंधों पर बस लदी किताबें
एक पराई बोली बौड़म
भारी बस्ता बासी बातें

इसको छोड़ कहाँ भग जायें
अंदर जायें बाहर जायें
परेशान थे सोच सोच कर
तभी कहीं पापा चिल्लाये
लौट के बुद्धू घर को आये।



गिरे ताल में चंदा मामा



गिरे ताल में चंदा मामा
सबने देखा सबने देखा
फंसे जाल में चंदा मामा
सबने देखा सबने देखा

सबने देखा एक अचंभा
मछुआरे ने जाल समेटा
कहीं नहीं थे चंदा मामा
कहां गये जी चंदा मामा

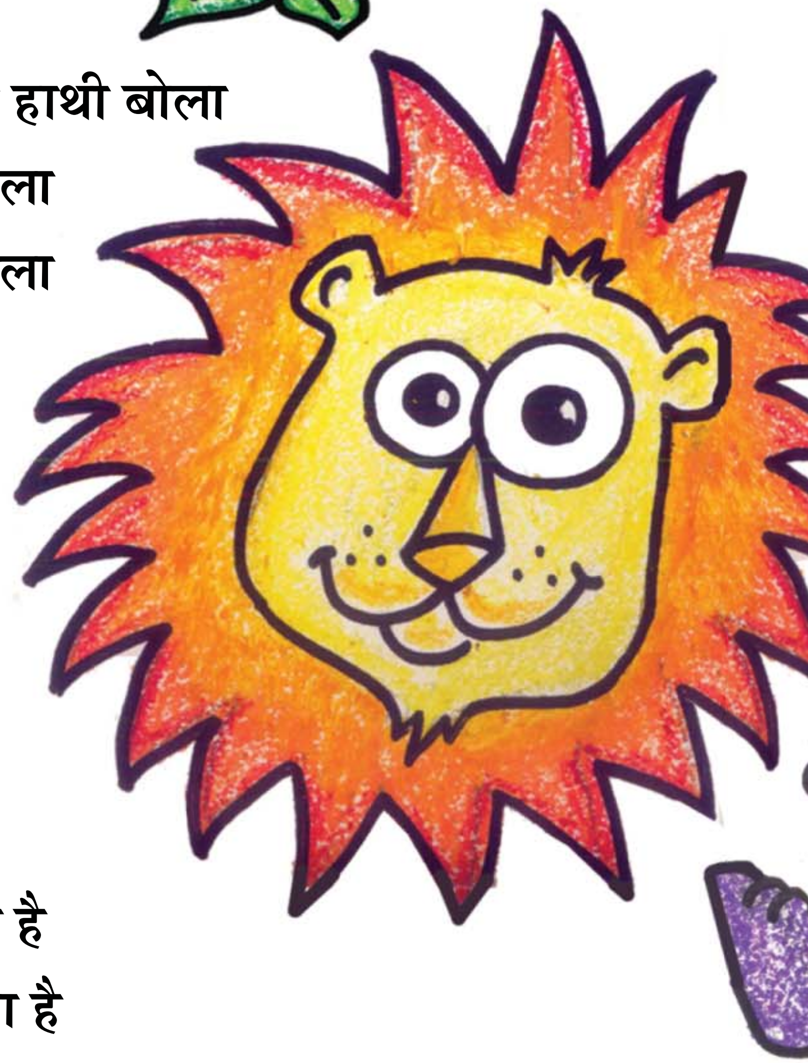
मछुआरे की मति चकराई
झांक झरोखे बोलीं ताई
पानी में जो दिखती बुद्धू
वो तो हैं चंदा की परछाई!

जय बम भोला





सूंड उठा के हाथी बोला
जय बम भोला
जय बम भोला



बुढ़ा गया जंगल का राजा
दिन भर कहता आजा आजा



छोटा शावक चिढ़ा रहा है
लोमड़ियों को भिड़ा रहा है

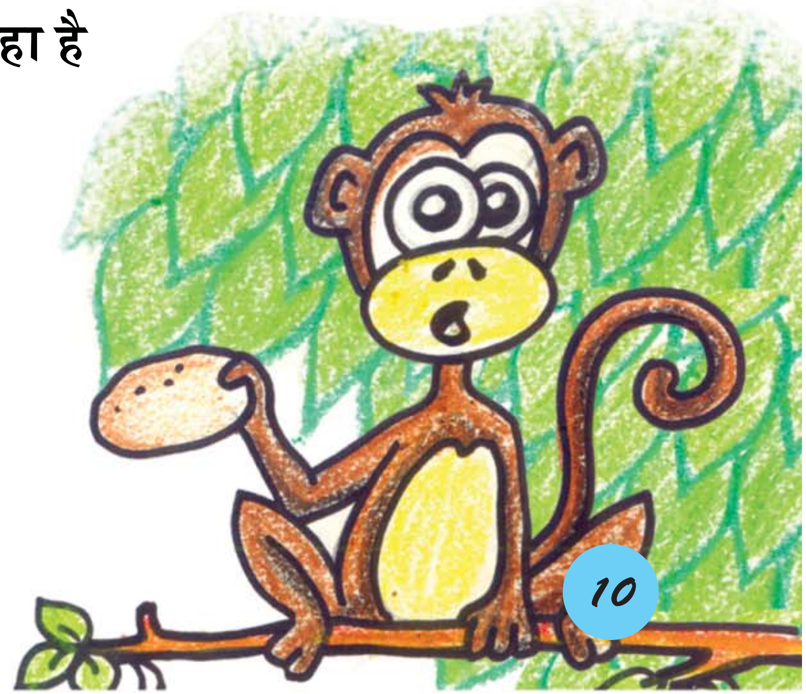




मोरों की दुम पर है पैसा
नाच रहा है भालू कैसा



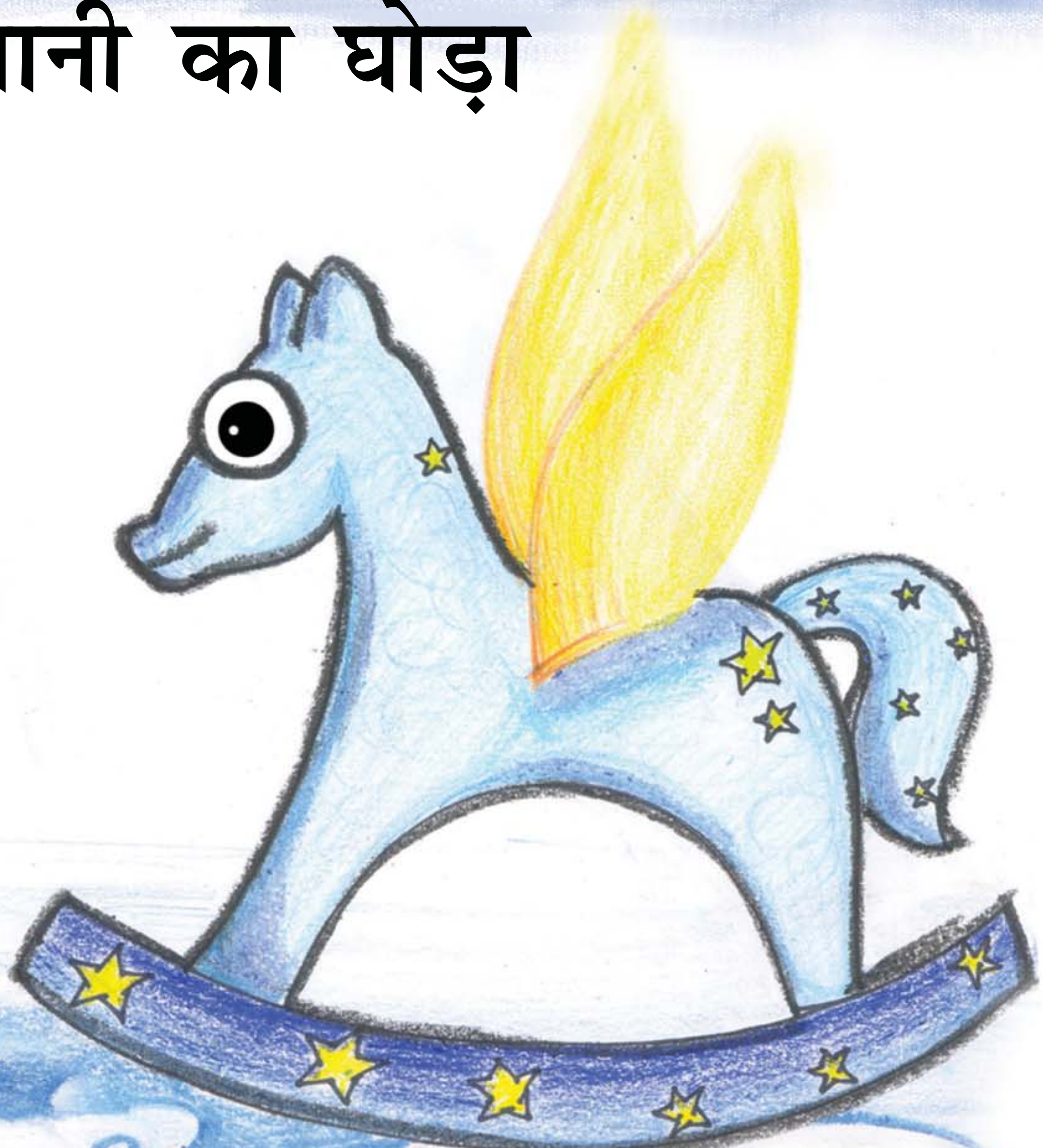
चीता अपनी हांक रहा है
जंगली भैंसा भाग रहा है



बादल है पानी का घोड़ा

बादल है पानी का घोड़ा
आकर नद्दी
प्यास बुझाई
धरती सींची
आग बुझाई

लगा धूप के
पंख रूपहले
नील गगन
में दौड़ा।



कोई नहीं है
इसका मालिक
कहीं नहीं है
इसका घर

भटक रहा यह
इधर उधर

तारे खाकर
पेट भरे यह

चमकाता बिजली का कोड़ा!
बादल है पानी का घोड़ा।



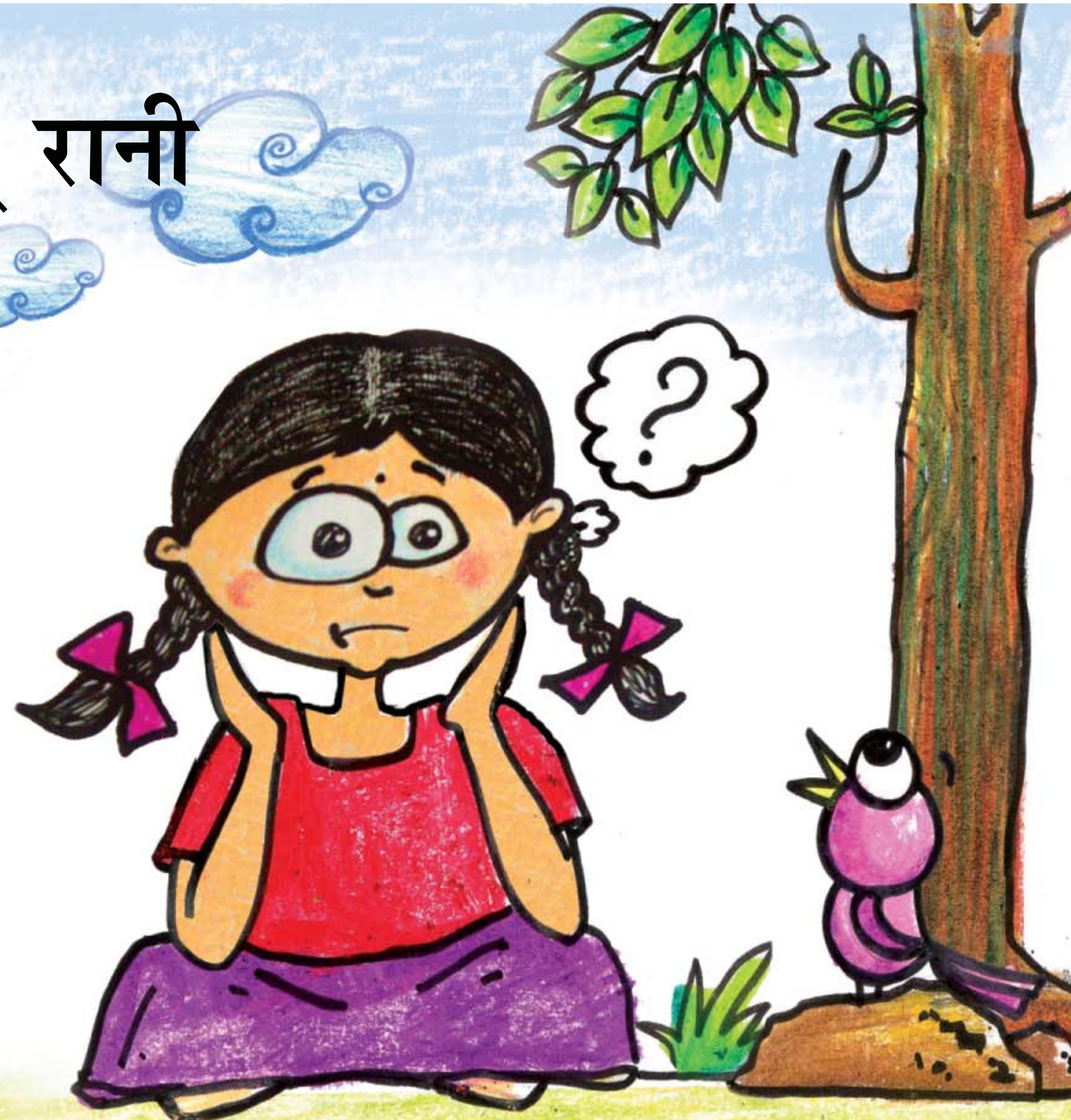
पूछ रही है मीठू रानी

घाघ भड्डरी कैसे ज्ञानी
बद्दल में भी नहीं है पानी
नॉव कहाँ तैरायें पापा
पूछ रही है मीठू रानी

पानी बाबा कब आयेंगे
ककड़ी, भुट्टे कब खायेंगे
औलाती में कब नहायेंगे

कब बरसेगा
छम छम पानी
पूछ रही है
मीठू रानी!



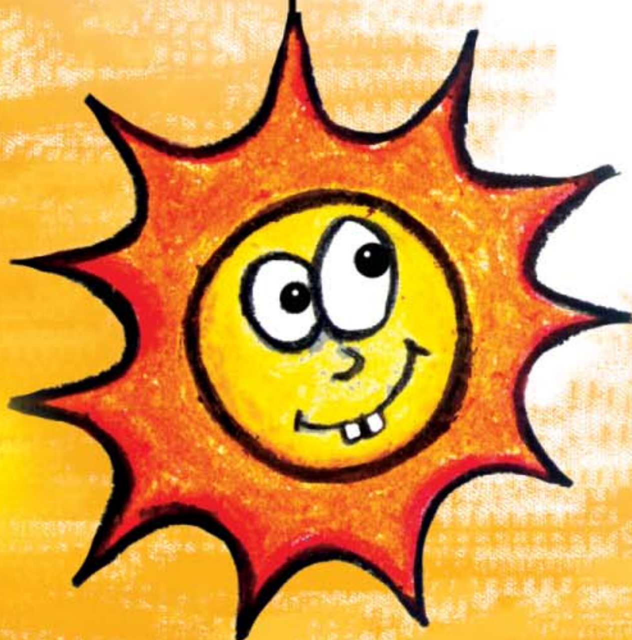


दो दो मामा



मीठू के हैं
दो दो मामा

सुबह सवेरे
इक आते हैं
पहन धूप का
धुला पजामा

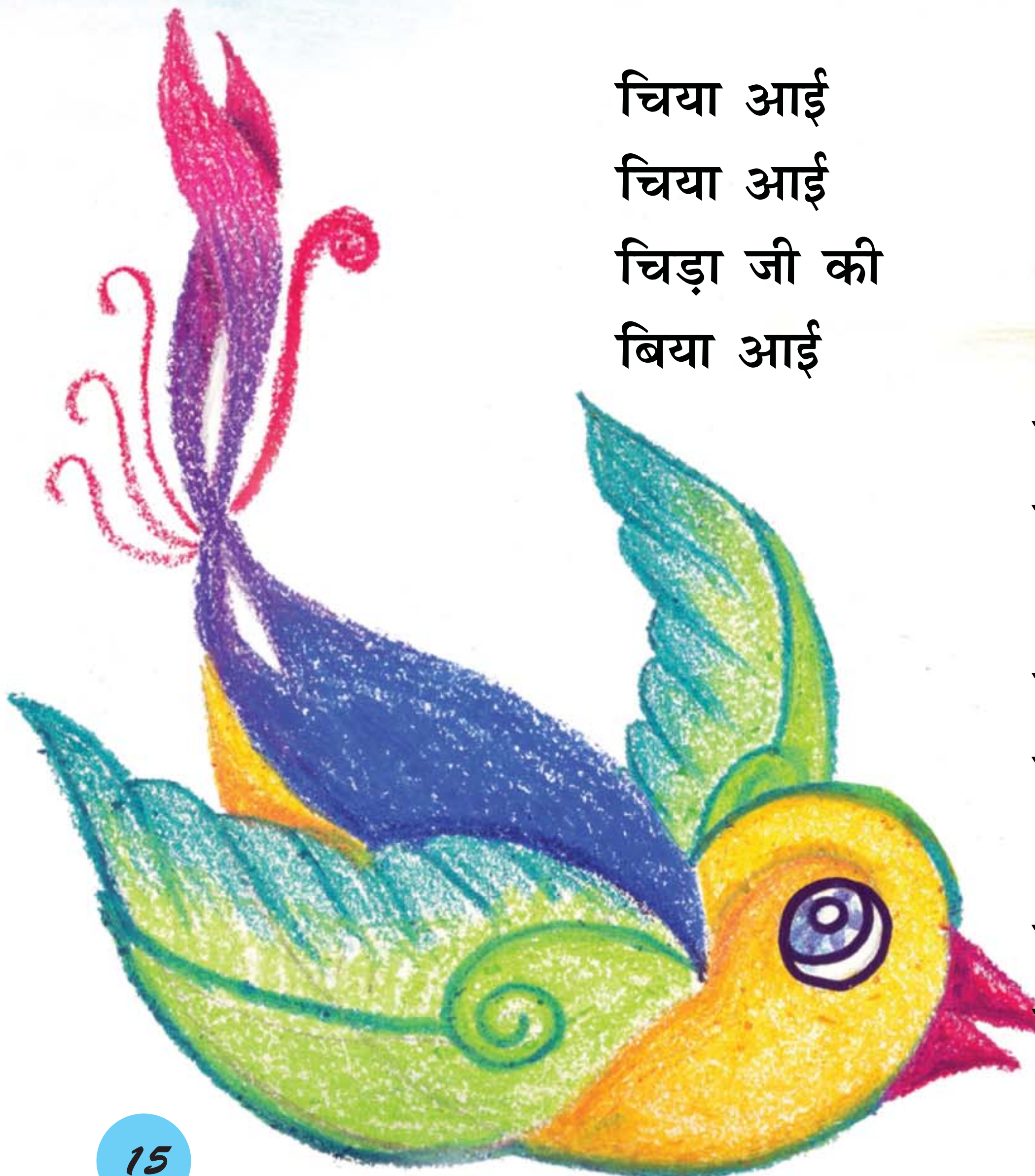


दूजे मामा
बहुत है प्यारे
टोप में उनके
लाख सितारे

चेहरा उनका
चमक दमक है
कोट है लेकिन
बहुत पुराना ।

बोल चिया री जल्दी बोल

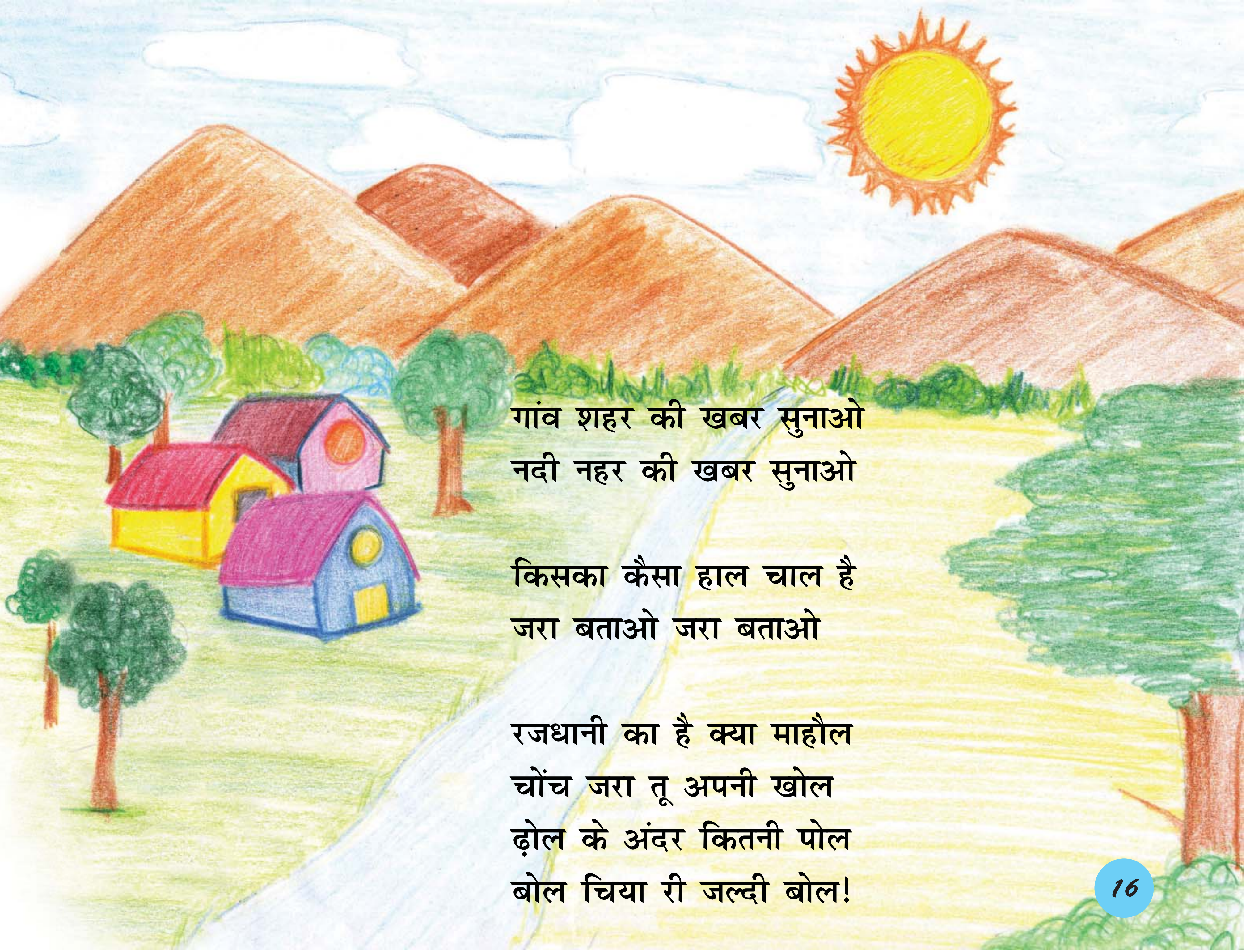
चिया आई
चिया आई
चिड़ा जी की
बिया आई



जरा रूपहले पंख तो खोलो
कहां छुपा है बटुआ बोलो

पान निकालो पान निकालो
जरा तम्बाखू उसमें डालो

एक दाढ़ में दाना लेकर
एक दाढ़ में इसे दबालो



गांव शहर की खबर सुनाओ
नदी नहर की खबर सुनाओ

किसका कैसा हाल चाल है
जरा बताओ जरा बताओ

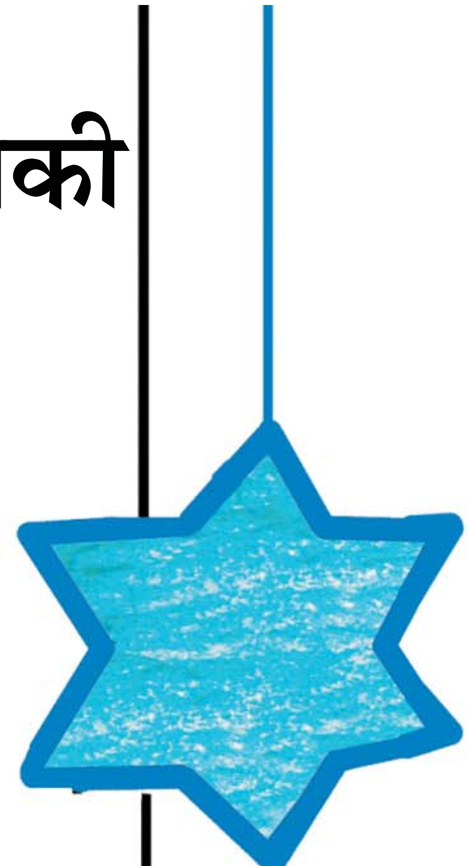
रजधानी का है क्या माहौल
चोंच जरा तू अपनी खोल
ढ़ोल के अंदर कितनी पोल
बोल चिया री जल्दी बोल!

हाथी घोड़ा पालकी



हाथी घोड़ा पालकी
जय कन्हैया लाल की

सूरज चमके
चंदा चमके
चमके खूब सितारे
अक्षर सीखो
अक्षर सीखो
जो सबसे उजियारे



अक्षर अक्षर शब्द बनाओं
शब्द है
चीज कमाल की।



हाथी घोड़ा पालकी
जय कन्हैया लाल की

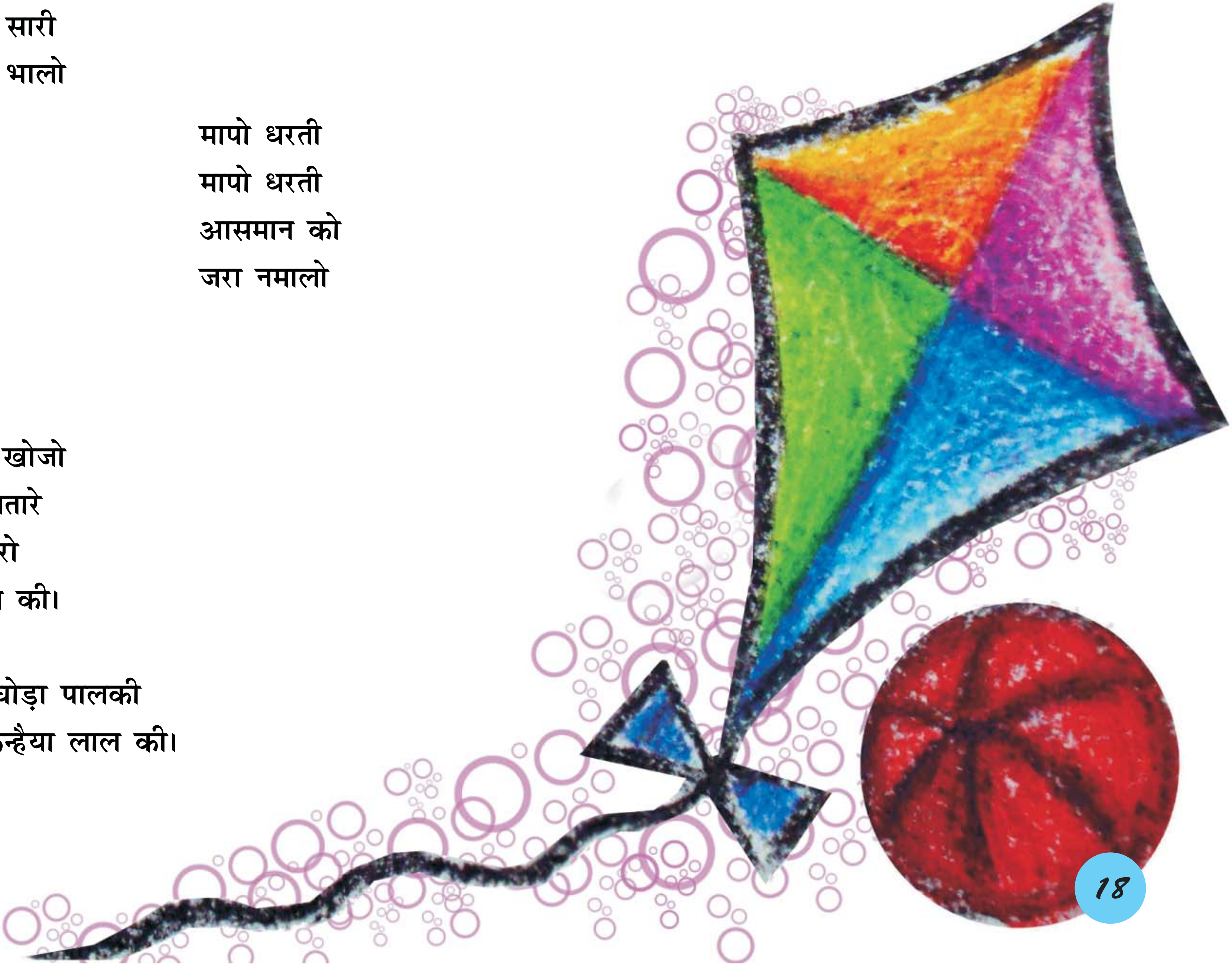


पतंग उड़ाओ
गेंद उछालो
चीजें सारी
देखो भालो

मापो धरती
मापो धरती
आसमान को
जरा नमालो

खोजो खोजो
नये सितारे
सैर करो
भोपाल की।

हाथी घोड़ा पालकी
जय कन्हैया लाल की।





आया राजा आया राजा

पहन मुखौटा आया राजा
धीरे-धीरे छाया राजा

फौजें आयीं फाटा आया
सबने मिल कर रौब जमाया
जनता का दुख बढ़ा रात दिन
बाजा बाजा ताक धिना धिन

नाच रहा था खुल्ला बंदर
चिड़िया थी पिंजरे के अंदर

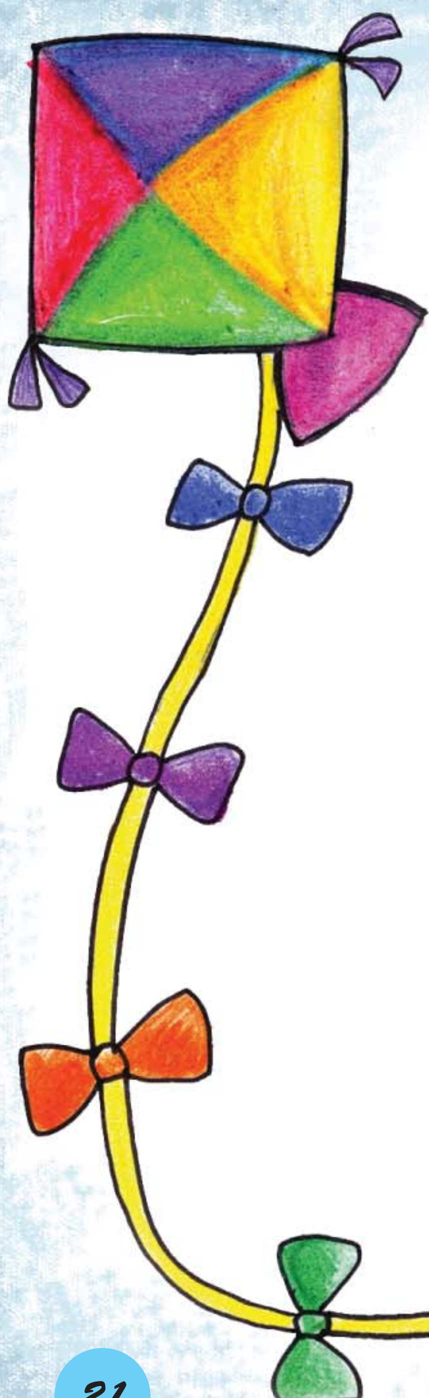
जिसका जोरा उसका मोरा
राजा का बस छोरा गोरा
जनता रोये जनता गाये
कौन उसे पर चुप करवाये



जनता ने फिर सोचा भाला
राजा का फिर पिटा दिवाला

फाड़ मुखौटा फैंका फाका
राजा भागा राजा भागा।



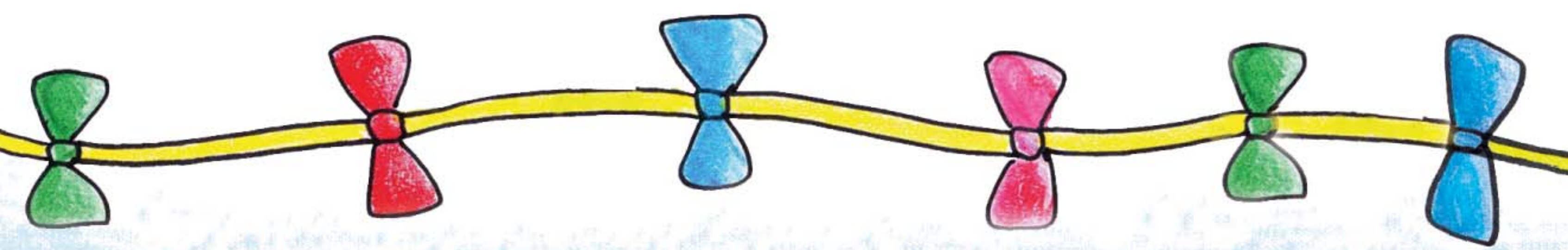


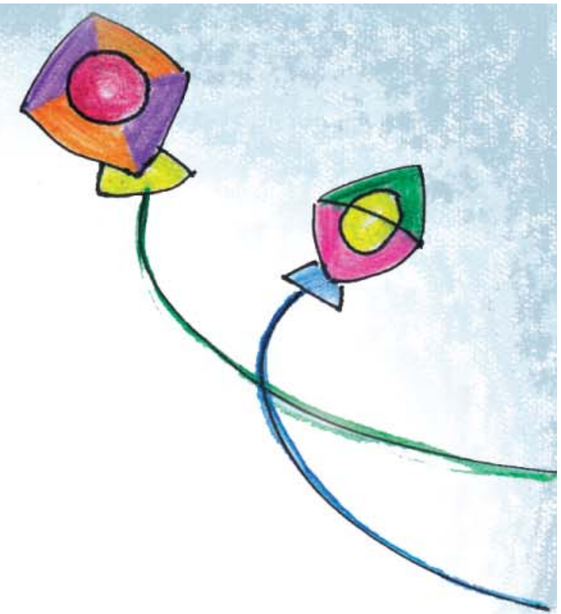
पतंग बनाओ

आओ
आओ
पतंग बनाओ!

आसमान से ले लो
थोड़ा कागज़ नीला
बांस वनों से
ठड्ड़े और कमानी ले लो
आटा थोड़ा माँ दे देगी
नदियों से कुछ पानी ले लो

बाँस छील कर मोड़ो उसको
लेई लगाकर जोड़ों सबको



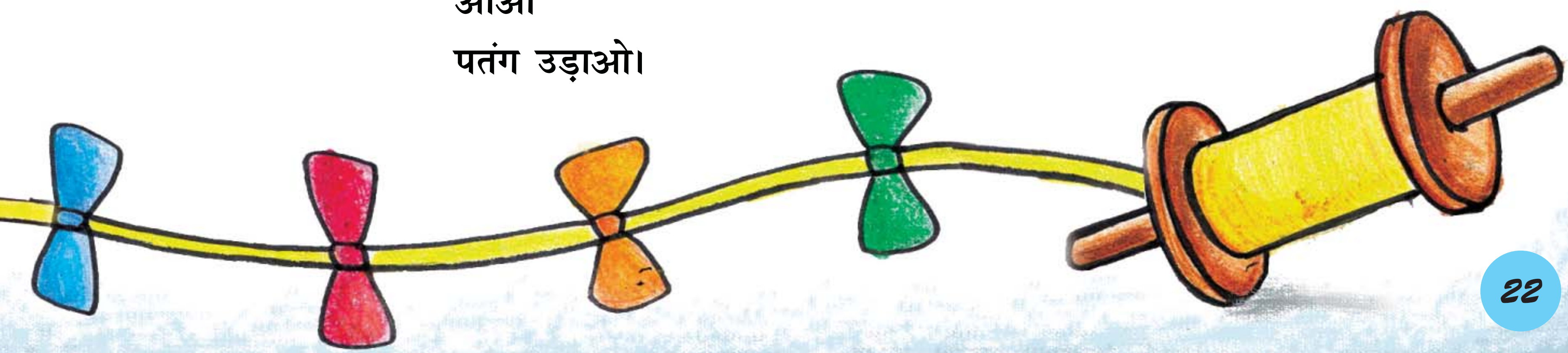


आसमान जब
खुला खुला हो
और हवा हो
जब मस्ती में

गूंथ गूंथ कर सपनों की
इक लम्बी डोरी
दूर गगन में इसे उड़ाओ

लिखकर मन की
बातें सारी
तारों को
पाती भिजवाओ

आओ
आओ
पतंग उड़ाओ।



साइकिल का सपना

मीठू की साइकिल ने एक सपना देखा
आसमान की नीली-नीली सड़को पर
चलना अपना देखा
साइकिल ने इक सपना देखा।



छिपता-छुपता पता नहीं वह कहां से निकला
और सीट पर औचक ही वह आ बैठा
लगता था कुछ ऐंठा-ऐंठा
मुंह फूला था ऐसे जैसे चांद नहीं कोई कद्दू हो
तारों ने उससे पूछा पर वह कुछ न बोला
बना रहा बस गुस्से को गोला
झट से उसने पैडिल मारा
इक बादल ने किया इशारा
तारे दौड़े, तारे दौड़े
आसमान में सारे दौड़े
फुदक-फुदककर, उचक-उचककर
कुछ कैरियर पर, कुछ डण्डे पर
कुछ हैंडिल पर ही जा बैठे

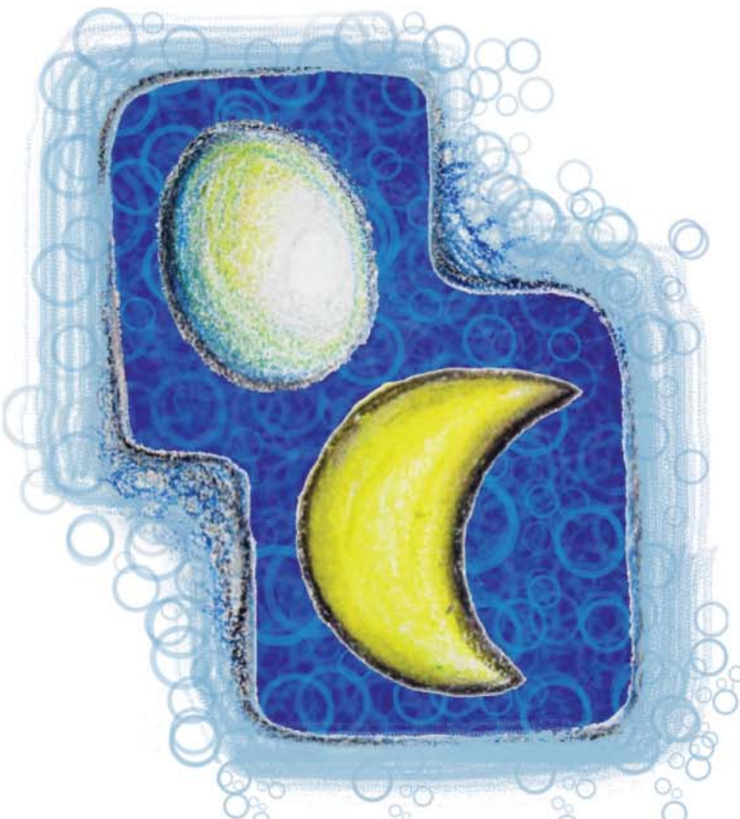


छिपता-छुपता पता नहीं वह कहां से निकला
और सीट पर औचक ही वह आ बैठा
लगता था कुछ ऐंठा-ऐंठा
मुंह फूला था ऐसे जैसे चांद नहीं कोई कद्दू हो
तारों ने उससे पूछा पर वह कुछ न बोला
बना रहा बस गुस्से को गोला
झट से उसने पैडिल मारा
इक बादल ने किया इशारा
तारे दौड़े, तारे दौड़े
आसमान में सारे दौड़े
फुदक-फुदककर, उचक-उचककर
कुछ कैरियर पर, कुछ डण्डे पर



कौतुक

पापा
सूरज क्या फूलों के रस से बनता है
तुम ही बोलो फिर क्यों पापा
सुबह शाम वो
लाल लाल सा
दिखता है?





पापा पापा
चंदा क्या अंडे से बनता है
तुम ही बोलो फिर क्यों पापा
पीला पीला
दिखता है?

BHARAT GYAN VIGYAN SAMITI

Basement of Y.W.A. Hostel, G Block, Saket, New Delhi - 110 017,
Phone : 011-2656 9943, Phone-Fax : 011-2656 9773
e-mail: bgvsdelhi@gmail.com, website : www.bgvs.org